ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम **विषय- हिन्दी**

दिनांक—11/07//2020 **सोना**

महादेवी वर्मा

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया** 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका दिन मंगलमय हो!

प्यारे बच्चों, व्याकरण में आपने संज्ञा पढ़ा। चलिए आज व्याकरण से थोड़ा हट जाते हैं और रोचक कहानी की तरफ चलते हैं।

एन सी इ आर टी पर आधारित

महादेवी वर्मा की कहानी 'सोना'।

आज महादेवी वर्मा के बारे में जानते हैं।

लेखिका का संक्षिप्त परिचय

आधुनिक मीरा महादेवी वर्मा का जन्म होली के दिन 24 मार्च सन 1907 ईस्वी को फर्रुखाबाद में हुआ था ।उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा प्रतिष्ठित कवि थे और माता श्रीमती हेम रानी देवी कवयित्री थीं। 9 वर्ष की बाल्यावस्था में ही श्री स्वरूप नारायण वर्मा से उनका विवाह हो गया । विवाह उपरांत उनकी विद्यालयीय शिक्षा गतिशील न रह सकी ।उनका पारिवारिक जीवन सुखमय ना रहा ।बाद में उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. संस्कृत की परीक्षा ससम्मान प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वे बहुत समय तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या रहीं। वे मधुर गीत लेखिका के रूप में साहित्य सृजन करने लगीं। हार्दिक वेदना एवं स्नेह को उन्होंने निरीह जीवों पर विकीर्ण किया।वे छायावादी सशक्त गीतकार के रूप में उभरकर आयीं तथा आधुनिक युग की मीरा कहलायीं। सरकार ने उन्हें 1956 ईस्वी में पद्मभूषण की उपाधि से विभूषित किया ।

यद्यपि महादेवी वर्मा कवयित्री के रूप में लोकप्रिय हैं, परन्तु वे एक सशक्त गद्य लेखिका भी हैं। काव्य के

अतिरिक्त गद्य के क्षेत्र में भी उनकी देन कम नहीं है । हिन्दी-जगत की यह साधिका 11 सितम्बर, सन् 1987 ई० को चिरनिद्रा में लीन हो गयीं।

महादेवी जी की कहानी 'सोना' के साथ मिलते हैं, अगली कक्षा में।

छात्र कार्य-

लेखिका का परिचय अपनी कॉपी में लिखें एवं कॉपी चेक करवाएँ।

इसे अति आवश्यक समझें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"

अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखें, स्वस्थ रहें, मजबूत रहें।